1.2

राम चरित मानस का इतिहास

❀ काव्यांश एवं व्याख्या ❀

भारतीय इतिहास और संस्कृति पर हजारों वर्षों से कठिन से कठिन आघात हुए हैं। अब तो रामायण और पुरुषोत्तम राम की प्रमाणिकता और सम्पूर्ण भारतीय इतिहास पर सम्पूर्ण संकट की स्थिति तक पहुँच चुकी है। और शायद भारतीय जन जीवन को इसकी चिन्ता अभी नहीं हो पाई है।

आज सच्चे इतिहास, नैतिकता का ज्ञान, आचरण और संस्कार के स्थान पर सिनेमा प्रचारित अश्लीलता, अनुशासन हीनता स्वार्थपरता, छल, हिंसा और आचरणहीनता प्रतिष्ठा पा रही है। आश्चर्य की बात तो यह है कि विदेशी साहबों ने भारतीय इतिहास और संस्कृति पर जितना आक्रमण किया, उसकी प्रतियोगिता में भारतीय काले साहब आगे बढ़ते रहे। परिस्थिति वश आज, विशेषकर नवीन पीढ़ी का विश्वास, वैदिक कालीन इतिहास की बात तो दूर रही, रामायण तक से उठता जा रहा है। और इधर ज्ञान या अज्ञान वश, कुछ असम्बद्ध सूत्रों का हवाला देकर कुछ लोग बड़े जोड़ शोर से प्रचार करने में लगे हैं कि रामायण की घटना बहुत पुरानी नहीं है और समुद्र पार लंका की कहानी गलत है आदि आदि। इस प्रकार भारतीय गौरव का अनुभव करने वाले हर व्यक्ति के लिए यह सोचने की बात है कि संकट कितना गंभीर है!

भारतीय वाङ्मय में इतना सांगोपांग वर्णन है कि उससे कहीं मतभेद का कोई कारण ही नहीं दिखता। दक्ष-प्रजापति की सृष्टि के उपरांत सारे विश्व में किस तरह प्रजा का विस्तार हुआ, इसका सांगोपांग वर्णन उपलब्ध है। उसकी प्राचीनता और सत्यता को आधुनिकतम वैज्ञानिक अनुसंधान और तत्कालीन भौगोलिक स्थिति प्रमाणित करते हैं। इस दिशा में श्री गणेशदत्त ओक के कार्य अत्यंत प्रशंसनीय हैं। भूगर्भ शास्त्र के विशेषज्ञ डा० अविनाश चन्द्र ने भी भारतीय साहित्य की अत्यंत प्राचीनता सप्रमाण सिद्ध की है।

सत्युग के बाद त्रेतायुग में राम का जो ऐतिहासिक वर्णन है वह सच्ची घटना के बिना कभी संभव नहीं है और सत्य को विकृत करना, राष्ट्र, विश्व, मानव और मानवता के लिए हितकर कदापि नहीं हो सकता, बल्कि घातक होगा।

रामचरित मानस से रामायण का ऐतिहासिक तथ्य इस प्रकार स्पष्ट है:—

अयोध्या और लंका या भारत और लंका के बीच घोर शत्रुता चल रही थी। तो भी अयोध्या का राज्य रामेश्वर तक था किन्तु लंका के राजा रावण ने बक्सर तक अपने अनेक उपनिवेश कायम कर रखे थे। यद्यपि अयोध्या की सुरक्षा में कोई संदेह नहीं था किन्तु अयोध्या के लिए यह भी संभव नहीं था कि वह रामेश्वर तक प्रजा को सभी जगह सुरक्षा दे सके।

रावण का राज्य, सेना और आयुध से अत्यंत शक्तिशाली हो

चुकी थी और उसके वीर और योद्धा सेना नायक रामेश्वर से लेकर बक्सर तक अनेकों सुसंगठित छावनियां तयार कर रहे थे। भारत के इतने विशाल क्षेत्र में न तो सभी जगह संगठित सेना थी और न कहीं वैसी संगठन। ऋषि और देवता (मनुष्यों में ऋषि के अलावे [illegible] नेता) [illegible] से प्रयास कर रहे थे लेकिन कोई सफल संगठन नहीं कर पा रहे थे। विश्वामित्र तरह तरह के नये आयुध [illegible] में संलग्न थे [illegible] युद्ध [illegible] अयोध्या से सेना लंका पहुँचना बहुत [illegible] की बात थी [illegible] समय के वन प्रांतों में रावण के अधीन जगह जगह [illegible] और [illegible] गुप्त और प्रकट, कार्यरत छावनियों [illegible] उल्टे इस प्रयास में, जिससे अपनी [illegible] के नष्ट होने की आशंका अधिक थी तब अयोध्या पर भी [illegible] की संभावना हो सकती थी क्योंकि [illegible] के पास अपार [illegible] थी [illegible] यहां के [illegible] ऋषि आयुध का निर्माण भी नहीं कर पा रहे थे क्योंकि रावण के नियुक्त सैनिक उसे नष्ट-भ्रष्ट करते जा रहे थे। इस प्रकार भारत की शक्ति उल्टे क्षीण हो रही थी।

विश्वामित्र एक अच्छे शस्त्रज्ञाता तथा वैज्ञानिक थे किन्तु उनके पास बहुत समर्थ कोई सेनानायक नहीं था [illegible] सेना के बारे में उन्हें पूरी जानकारी थी। [illegible] पर्याप्त सेना जो अयोध्या या अयोध्या के [illegible] अधीन राज्यों से उन्हें मिली हुई थी, वह सुरक्षा में समर्थ नहीं हो रही थी। विश्वामित्र

और अनेक अन्य या प्रायः सभी ऋषियों ने मिलकर इस परिस्थिति का सामना करने के लिए योजना बनाई जिसमें शिव का भी सदेह सहयोग प्राप्त था। शिव, जो रावण के गुरु थे रावण के हठ और मनमानी से क्षुब्ध हो चुके थे।

योजना के प्रमुख तत्व ये थे। आयुध निर्माण की सुरक्षा की सर्व प्रथम गारंटी हो। अपनी सैन्य शक्ति और उसकी गतिविधि का शत्रु को पता न हो अर्थात् रावण के किसी छावनी को या गुप्तचर को पता न हो। यज्ञशाला पर छावनी द्वारा आक्रमण रावण की सामान्य नीति थी और उसमें उसे कोई बड़े खतरे की आशंका नहीं थी। अतः योजना के अनुसार यज्ञशाला की सुरक्षा की शक्ति गुप्त रूप से इतनी अधिक बढ़ा देनी थी कि बिना अपनी क्षति उठाए आक्रमणकारी को पूर्णतः नष्ट कर दिया जाय या पूर्णतः पराजित कर दिया जाय। शत्रु की शक्ति का लेखा जोखा और विवरण ऋषियों ने पूर्ण रूप से प्राप्त कर रखा था। शस्त्र ज्ञान में भी ये पीछे नहीं थे। इनकी नीति आडम्बर-हीनता, सत्य, अहिंसा, सरलता और प्रेम की थी। जगह-जगह सेना इकट्ठी करते जाना और प्रजा को संगठित और सतर्क करते जाना इनकी योजना का अंग था। रामेश्वर तक जगह-जगह गुप्त संचार केन्द्र और पूर्ण गुप्तचर व्यवस्था ऋषियों और देवताओं ने कायम कर रखा था।

विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी। बसहि बिपिन सुभ आश्रम जानी॥
जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं। अति मारीच सुबाहुहि डरहीं॥

इस स्थिति में विश्वा मित्र ने राजा दशरथ को पूरी योजना समझाकर कि अयोध्या का और राम का किस प्रकार यश बढ़ेगा, सेनानायकत्व हेतु राम और लक्ष्मण को अपने साथ ले आए।

देहू भूप मन हरषित, तजहुँ मोह अज्ञान।
धर्म सुयश प्रभु तुम्हकों, इन्ह कहँ अति कल्याण॥

राम और लक्ष्मण दोनों वीर उत्साह के साथ विश्वामित्र के साथ चले।

पुरुष सिंह दोउ वीर हरषि चले मुनि भय हरन।
कृपा सिंधु मतिधीर अखिल विस्व कारन करन॥

निकट सम्पर्क होने पर ऋषि ने राम-लक्ष्मण को आशा से भी अधिक वीर और योग्य पाया। तदनुसार उन्हें अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा दिया और अस्त्र-शस्त्र भी दिया।

तब रिषि निज नाथहि जियँ चीन्हीं। विद्यानिधि कहुँ विद्या दीन्ही॥
आयुध सर्ब समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि।
कन्द मूल फल भोजन दीन्ह भगति हित जानि॥

योजना का अगला अंग था सुधारवाद और जनमत का पूर्ण सहयोग प्राप्त करना। उन्होंने बहिस्कृत अहल्या को पूर्ण प्रतिष्ठित समाज में पुनः प्रतिष्ठित कराया। यह ऋषि और रामचन्द्र के आदेश से सर्वमान्य हुआ। अध्यात्म रामायण के अनुसार वह मात्र बहिष्कृत थी। अतः उपल देह का यही अर्थ है। विश्वामित्र कट्टरपंथी न होकर सुधारवादी थे, शास्त्रों में ऐसा ही वर्णन है जो सर्व विदित है।

गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर ।
चरन कमल रज चाहति कृपा करहुँ रघुवीर ॥

धनुष यज्ञ और जनक राज के साथ सम्बन्ध भी संगठन, शक्ति और प्रचार हेतु योजना का एक अंग था जिसमें विश्वामित्र के साथ-साथ परशुराम का भी योग था। धनुष एक वैज्ञानिक उपकरण था जो वैज्ञानिक जानकारी के बिना नहीं टूट सकता था।

गुरुहि प्रनामु मनहि मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा ॥
दमके दामिनि जिमि जब लयऊ। पुनि नभ धनुमंडल सम भयऊ ॥
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें। काहूँ न लखा देख सबु ठाढ़ें ॥
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा ॥

संकर चापु जहाजु सागरु रघुबर बाहुबल।
बूड़ सो सकल समाजु चढ़ा जो प्रथमहिं मोहबस ॥

परशुराम रामचंद्र से पूर्ण परिचित नहीं थे। इन्हे प्रथम संदेह हुआ कि वैज्ञानिक जानकारी कहीं शत्रु को न प्राप्त हो गई हो। पुनः विश्वामित्र को देखने और रामचन्द्र की योग्यता की जाँच के उपरांत उन्हें पूर्ण संतोष हुआ। प्रत्यक्ष रोष इन सब को गुप्त रखने हेतु था।

बइइ न हाथु दहइ रिस छाती। भा कुठार कुंठित नृपघाती ॥
भयउ बाम बिधि फिरेउ सुभाउ। मोरे हृदय कृपा कसि काऊ ॥
जेहिं रिस जाइ करिअ सोई स्वामी। मोहि जानिय आपन अनुगामी ॥
सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपति के। उघरे पटल परसुधरमति के ॥

कोड भाषा, गूढ़ वचन या गुप्त संकेत के बाद परशुराम पूर्णतः आश्वस्त हुए।

राम रमापति करधनु लेहू। खैंचहु मिटै मोर संदेहू॥
देत चापु आपुहिं चलि गयऊ। परशुराम मन विसमय भयऊ॥

इसी क्रम में राम का अगला वन गमन हुआ जिसे गुप्त रखने का श्रेय कैकेयी को लेना था और प्रबन्ध भी करना था और इसका न्यूनाधिक आभाष गुरु वशिष्ठ को भी अवश्य था इन जो चौपाइयों से स्पस्ट हैं:—

राम करहूँ सब संयम आजू। जो विधि कुसल निवाहै काजू॥
विमल बंस यह अनुचित एकू। बन्धु बिहाय बड़ेहि अभिषेकू॥
मुनिगन मिलनु विशेष वन सबहिं भाँति हित मोर।

आगे की एक-एक प्रबंध व्यवस्था इसी की संपुष्टि करती है। निषाद ने पूर्ण जानकारी और राजनैतिक व्यवस्था के अनुसार और सुरक्षा के अनुसार अत्यंत विश्वसनीय पहरेदारों को रामचन्द्र के पास रखा।

यह सुधि गुहँ निषाद जब पाई मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई॥
गुहँ बोलाई पाहरु प्रतीती। ठांव-ठांव राखे अति प्रीति॥
आपु लखन पहिं बैठेउजाई। कटि भाथी सर चाप चढ़ाई॥

वन यात्रा के साथ निहित मनोकामना थी। यह मनोकामना सिर्फ राम और लक्ष्मण की ही नहीं थी बल्कि सीता की भी थी। सीता कोई अबला नारी नहीं थी। उसकी वीरता का परिचय धनुष के प्रसंग से प्राप्त होता है कि धनुष हटाकर जमीन धोना उसका

सहज कार्य था जिस धनुष को बड़े-बड़े वीर तोल भर नहो डिगा सके थे। सीता को आशीर्वाद देती हुई गंगा कहती हैं कि तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी और विश्व में तुम्हारे यश का विस्तार होगा।

पूजिहि सब मनकामना, सुजसु रहिहि जग छाइ।

निर्दिष्ट मार्ग और छावनी या मंजिल का मार्ग दिखाने के लिए निषाद साथ चलता है और रामचन्द्र साथ लेकर चलते हैं।

सहज सनेह राम लखि तासू। संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू।।

जन साधारण का पूर्ण समर्थन है, जन सहयोग प्राप्त है तथा जन समूह में भरपूर उत्साह है। स्थिति से ऋषि लोग संतुष्ट और मुदित हैं। रामचन्द्र भी हृदय से मुदित होते हैं। भारद्वाज साथ में चार शिष्य देते हैं अगली मंजिल तक के लिए और कहते हैं कि तुम्हारे सभी मार्ग प्रशस्त हैं।

चले सहित सिय लखन जन मुदित मुनिहि सिरु नाई।

मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे। जिन्ह बहु जनम सुकृत सब कीन्हे।।
मुनि मन बिहसी रामघन कहहीं। सुगम सकल मग तुम्ह कहुँ अहहीं।।
जहं जहँ राम चरन चलि जाहीं। तिन्ह समान अमरावति नाहीं।।
देखत बन सर सैल सुहाए। बालमीकि आश्रम प्रभु आए।।

वाल्मीकि के आश्रम में मंत्रणा होती है और तय होता है कि सभी समुदायों के संगठन से चित्रकूट में एक बृहद् संगठन बनाया जाय। इस हेतु वहाँ सभी लोग इकट्ठे होते हैं। रामचन्द्र स्पष्ट कहते हैं कि मेरे राज्य में यदि तापस दुखी होंगे तो मेरे लिए बिना अग्नि के ही जलने के समान है। इसलिए मैं उनके दुख को दूर करने आया हूँ।

देखि पाय मुनि राय तुम्हारे । भए सुकृत सब सुफल हमारे ॥
अब जहँ राउर आयसु होई । मुनि उदबेगु न पावै कोई ॥
मुनि तापस जिन्हते दुखु लहहीं । ते नरेस बिनु पावक दहहीं ॥
अस जियँ जानि कहिय सोइ ठाऊँ । सिय सौमित्र सहित जहँ जाऊँ ॥
चित्रकूट गिरि करहु निवासू । तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू ॥
अमर नाग किंनर दिसिपाला । चित्रकूट आए तेही काला ॥
बरषि सुमन कह देव समाजू । नाथ सनाथ भए हम आजू ॥
यह सुधि कोल किरातन्ह पाई । हरषे जनु नव निधि घर आई ॥

इसके उपरांत बड़ी सेना लेकर भरत भी चित्रकूट पहुँचे ।

जौं पै जियँ न होति कुटिलाई । तौ कत लीन्ह संग कटकाई ॥

जब राजा जनक को सब समाचार मिला तो वे भी बहुत बड़ी सेना लेकर तत्काल वहाँ पहुँचे ।

धरि धीरजु करि भरत बड़ाई । लिए सुभट साहनी बोलाई ॥
घर पुर देश राखि रखवारे । हय गय रथ बहु जान सँवारे ॥
दुघरी साधि चले तत्काला । किए बिश्रामु न मग महिपाला ॥

अब चित्रकूट क्षेत्र पूर्णतः सुरक्षित था । इस क्षेत्र में रावण के किसी गुप्तचर का प्रवेश संभव नहीं रह गया था । इस से आगे बढ़ने का तो प्रश्न ही नहीं था ।

जयंत का एक बिल्कुल असफल छोटा सा विद्रोह हुआ जिसे पूर्णतः शांत कर दिया गया ।

कीन्ह मोह बस द्रोह जद्यपि तेहिकर बध उचित ॥
प्रभु छाड़ेउ करि छोह को कृपाल रघुबीर सम ॥

सभी ऋषि तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग दे रहे थे। अनुसूया ने बसन-आभूण आदि का दान दिया।

दिव्य बसन भूषण पहिराए। जे नित नूतन अमल सुहाए॥

संदिग्ध आचरण के व्यक्ति का राम के यहाँ किसी प्रकार प्रश्रय प्राप्त नहीं था।

मिला असुर विराध मग जाता। आवत हीं रघुवीर निपाता॥

चित्रकूट से रामचंद्र के पयान का समाचार ब्रह्मलोक आदि सभी जगह गुप्त रूप से पहुँच चुका था।

जात रहें ऊँ विरंचो के धामा। सुनेऊँ श्रवण बन ऐहहीं रामा॥

आगे का क्षेत्र टकराव का क्षेत्र था जहाँ रावण की ओर से लगातार छिटफूट आक्रमण हो रहा था। अनेकों ऋषि लोग तथा उनकी सेना अपने प्राण खो चुके थे और अनेकों स्थान छोड़कर भाग गए थे। अत्यंत गुप्त यज्ञशाला और केन्द्र ही इधर बच पाये थे। अब रामचन्द्र के साथ सभी ऋषि लोग वापस लौट रहे थे और आगे बढ़ रहे थे। रामचन्द्र की अद्भुत वीरता, कौशल और पराक्रम तथा सद्भावना, दया आदि गुणों की गाथा, जिनमें पूर्ण सचाई थी, सभी जगह व्यापक रूप से फैल चुकी थी। लंका का जन-मानस भी रावण की मनमानी से अत्यंत क्षुब्ध था। लंका में भारत के अधिक संख्या में कैदी मौजूद थे। इस प्रकार लंका में गुप्तचर्या तथा विचार प्रचार का कार्य गोपनीय किन्तु तीव्रगति से बढ़ाया गया। रावण कुछ इसलिए निश्चिंत था कि भारत में बहुत दूर तक से ऋषियों को वह अपनी जानकारी में खदेड़ चुका था, कुछ इसलिए चुप था कि राम के

प्रादुर्भाव के बाद बक्सर में पुनः छावनी कायम करना संभव नहीं समझ रहा था और अन्त में अहंकार वश और मदिरा में मस्त रहने वाले गुप्तचर से उसे रामचन्द्र के यहाँ तक बढ़ आने का पता नहीं था, अतः अभी तक वह बहुत कुछ निश्चित था।

पुनि रघुनाथ चले बन आगे। मुनिवर बृन्द बिपुल सँग लागे ॥
अस्थि समूह देखि रघुराया। पूछी मुनिन्ह लागी अति दाया ॥
जानत हूँ पूछिय कस स्वामी। सब दरसी तुम्ह अंतरजामी ॥
निसिचर निकर सकल मुनि खाए। सुनि रघुबीर नयन जल छाए ॥

निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह।
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाई जाई सुख दीन्ह ॥

रामचन्द्र ने अरण्य में छिपे रावण के सैनिकों को खोज-खोज कर खदेड़ दिया या युद्ध में मौत के घाट उतारे। सभी जगह सुरक्षा को पूर्ण व्यवस्था की गई और ऋषि अपने-अपने आश्रम में व्यवस्थित रूप से रहने लगे। आवश्यक यज्ञशालाओं का निर्माण हुआ। पहले से देवता लोग गुफाओं में गुप्त केंद्र जगह-जगह बना रखे थे किन्तु अब सब निर्भय और प्रकट रूप में स्वतंत्रता पूर्वक रहने लगे।

जब रघुनाथ समर रिपु जीते। सुर नर मुनि सब के भय बीते ॥

जब बिल्कुल तटवर्ती क्षेत्र छोड़कर, भारत के भीतर से रावण की सेना पूर्ण रूप से भगा दी गई तथा उसकी गति विधि बंद हो गई, तब उसे चिन्ता हुई। उसने स्थिति की जाँच कर सूर्पनखा से रिपोर्ट मांगी। रामचन्द्र के लिए तटवर्ती क्षेत्र पर-मारीच-खरदूषण आदि की छावनियों पर आक्रमण कर उन्हें परास्त करना संभव था किन्तु

आक्रमण में क्षति अधिक उठानी पड़ती जब कि सतर्क रहने के कारण अपने व्यूह में पहुँचने पर शत्रु को अत्यंत आसानी से परास्त कर पाते थे या समाप्त कर पाते थे। इन्होंने इस प्रकार मोर्चा बना रखी थी। लंका पर तो आक्रमण करने की न इच्छा थी न नीति और न विजय कर राज्य लेने का लोभ था। टकराव की स्थिति में, रावण का किसी प्रकार समझौता, अनाक्रमण संधि या व्यवहारिक रुप से भारत में अपनी सेना के प्रवेश का रोक नहीं मानने के कारण आक्रमण करना पड़ा था। बंदी ऋषियों को मुक्त करने के बजाय रावण ने सीता को भी बंदी बना लिया था और किसी प्रकार मुक्त करने को तैयार नहीं था, वह आगे के प्रकरण से स्पष्ट है।

सूर्पनखा कूटनीतिज्ञता में अत्यंत दक्ष थी और अच्छी सेना-नायिका भी जिस पर रावण भरोसा करता था। खर-दूषण आदि उसके अधीन नियुक्त अधिकारी थे।

उधर सूर्पनखा ने रावण को रिपोर्ट दी:—

करसि पान सोवसि दिनु राती। सुधि नहिं तव सिर पर आराती॥

इधर रामचन्द्र ने अपनी सूचना के आधार पर दूरदर्शी योजना बनाई। उन्होंने तय किया कि सीता को बंदी के रूप में लंका में प्रवेश करना चाहिए जिसमें वहाँ जनमत प्रशिक्षण और गुप्तचर्या का अधिक योग्यता से नेतृत्व हो सके।

लक्ष्मण से विरोध और तर्क की अधिक सम्भावना थी जब कि राम इस योजना में विलम्ब नहीं चाहते थे। अतः तत्काल उन्होंने इस योजना को लक्ष्मण से भी गुप्त रखा।

तुम्ह पावक महँ करहु निवासा। जौ लगि करौं निसाचर नासा॥
लछिमनहु यह मरमु न जाना। जो कछु चरित रचा भगवाना॥

तदनंतर भारतीय क्षेत्र के भीतर अन्तिम मोर्चे में सीता तो बंदी बना लीगई लेकिन रामेश्वर तक भी अब रावण की पहुँच के बाहर हो गया। राम-लक्ष्मण के साथ युद्ध को आए हुए रावण के सभी सैनिक मारे गए। रावण भी, लंका की सुरक्षा का विचार करते हुए भारतीय क्षेत्र में और अधिक सेना गँवाना नहीं चाहता था। बची खुची सेना के साथ वह सीता को बंदी बनाकर लौटना ही ठीक समझा किन्तु बहुत आसानी से वह बंदी बनाकर लंका नहीं लौट सका। राम की मोर्चेबंदी रामेश्वर तक की हुई थी। गीधराज तक अर्थात् अंतिम क्षेत्र तक उसे काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा और नुकसान उठाना पड़ा यद्यपि कि सीता को बंदी बन कर जाना अभिष्ट ही था।

गीधराज सुनि आरत बानी। रघुकुल तिलक नारि पहिचानी॥
चोचन्ह मारि बिदारेसि देही। दंड एक भई मुरुछा तेही॥

रामचन्द्र को तो पता था ही कि सीता बंदी बनकर लंका गई है।

जनकसुता परिहरिहु अकेली। आयहु तात बचन मम पेली॥
निसिचर निकर फिरहिं बन माहीं। मम मन सीता आश्रम नाहीं॥

निर्दिष्ट मार्ग से गीधराज के पास पहुँचे।

नाथ दशानन यह गति कीन्ही। तेही खल जनक सुता हरि लीन्ही॥

निर्धारित अगला पड़ाव, सबरी के आश्रम पर आवश्यक जानकारी प्राप्त हुई।

जनक सुता कइ सुधि भामिनी। जानहि कहु करिबर गामिनी ॥
पंपासरहिं जाहु रघुराई । तहँ होइहि सुग्रीव मिताई ॥

इस अवसर की अन्तिम मंत्रणा हेतु देवर्षि नारद भी पधारे। कहना न होगा कि यदि रावण समझ न सका तो अन्तिम युद्ध की तैयारी कर ही आगे बढ़ना था।

बिरहवंत भगवंत हिं देखी। नारद मन भा सोच बिशेषी ॥

गिरि गह्वर में कितना गुप्त और शक्ति, संचार और सूचना से सुव्यवस्थित केन्द्र था, वह आज के लिए भी अद्भुत है।

दीख जाइ उपवन बर सर बिगसित बहु कंज।
मंदिर एक रुचिर तहँ बैठि नारि तप पुंज ॥

तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई। कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ॥

रामचन्द्र की सेना को इसी प्रकार पूर्ण व्यवस्थित सहायता सभी जगह प्राप्त होती गई। अपने कार्यक्रम को व्यवहारिक जाँच भी इनकी कार्य पद्धति का सामान्य अंग था। जब हनुमान लंका के लिए चले तो जाँच की जिम्मेवारी सुरसा को दी गई। मानना होगा कि उस समय की कार्यकुशलता आज की आधुनिकतम टेकनीक को कहीं पीछे छोड़ जाती है। तब जितनी सुव्यवस्था थी, आज व्यवस्था के बीच उतनी ही कुव्यवस्था हो जाती है। यह सत्य, अहिंसा, त्याग, न्याय, निस्वार्थता, धर्म और कर्त्तव्य के सम्मिलित कार्य का ही अद्भुत प्रभाव था।

माहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा। बुद्धि बल मरमु तोर मैं पावा ॥

लंका सभी तरह के बंदियों से भर चुका था। साथ ही रावण की

अपनी प्रजा असंतुष्ट थी और शांति और न्याय चाहती थी और रावण द्वारा स्वार्थपूरित और आचार विहीन जो प्रजा थी वह मदिरा पान और लड़ाई, झगड़ा तथा तरह-तरह के अनाचार में जीवन बिता रही थी।

नर नाग सुर गंधर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहिं।
नाना अखारेन्ह भिरहिं वहुविधि एक एकन्ह तर्जहीं।।
करि जतन भट कोटिन्ह विकट तन नगर चहुँ दिसो रच्छहीं।

अन्याय और प्रमाद का शासन देख कर विभीषण का जीवन दूभर हो गया था। वह चाहता था कि सद्वृति जागृत हो और शासन में न्याय और शान्ति की प्रतिष्ठा हो। वह यह भी जानता था कि राम को न रावण का वध अभिष्ट है और न लंका का राज्य। उनका अभिष्ट है सद्वृत्तियों को जगाना और बंदियों को मुक्त कराना। इसलिए राम कें दूत के पहुँचने की सम्भावना में उसे खुशी होती है।

की तुम्ह रामदीन अनुरागी। आयहु मोहि करन बड़भागी।।

सीता के समर्थ विवेक, व्यवहार और सहानुभूति से अनेकों दासियाँ विश्वास पात्र बन चुकी थीं। सीता के कुशल नेतृत्व और अद्भुत क्षमता से अनाचार के प्रति विद्रोह का जितना भयंकर वातावरण तैयार हुआ, रामचन्द्र के विरोध के परिणाम में, लंका के नाश और दुर्दशा के चित्रण का भी उतना ही व्यापक प्रचार हुआ।

रावण पक्ष का मनोबल इतना गिर चुका था कि मंदोदरी तक का हार्दिक समर्थन टूट चुका था। वह हृदय से चाहने लगी थी कि रावण राम के साथ भारतीय क्षेत्र पर अनाक्रमण की संधि कर सभी

कैदियों को मुक्त कर दे तथा अपने राज्य में न्याय और सद्वृत्ति की प्रतिष्ठा करे।

जब ते तुम्ह सीता हरि आनी। असगुन होहिं न जाहिं बखानी॥
यह सपना मैं कहऊँ पुकारी। होइहि सत्य गएँ दिन चारी॥

सीता ने हनुमान की बुद्धि, बल आदि की परीक्षा ली और जातुधान की शक्ति का लेखा-जोखा बताया तथा रामचन्द्र की अब तक संगठित शक्ति की पूछताछ की। उसने हनुमान से खिमित आतंक पूर्ण और जोखिम का कार्य भी कराया। रामचन्द्र को कई सांकेतिक संदेश पठाये तथा स्पष्ट रूप से कहा कि रामचन्द्र महाराज से आश्वस्त कर कहना कि मनोकामना पूरन हेतु यहाँ पूरी व्यवस्था हो चुकी है और पूर्णतः पृष्ठभूमि तैयार है।

हैं सुत कपि सब तुम्हहिं समाना। जातुधान अति भट बलवाना॥
मोरे हृदय परम संदेहा। सुनि कपि प्रगट कीन्ह निज देहा॥
देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु।
रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु॥
कहेहु तात अस मोर प्रनामा। सब प्रकार प्रभु पूरनकामा॥
दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी॥
तात सक्रसुत कथा सुनाएहु। बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु॥

इधर रामचन्द्र के साथ शिव का भी पूर्ण सहयोग अभिष्ट था। (कुंभज) अगस्त मुनि के माध्यम से यह कार्य पूरी तरह चलता रहा किन्तु राम और शिव प्रत्यक्ष रुप में लंका युद्ध के अन्तिम चरण के पूर्व आपस में नहीं मिले इस प्रकार सहयोग की योजना भी गुप्त रखी गई।

एकबार त्रेता युग माहीं। शंभु गयें कुंभज ऋषि पाहिं॥

देखने पर भी शिव (शंभु) प्रत्यक्ष रूप से राम से नहीं मिल सके क्योंकि सहयोग का भेद खुलने देना नहीं था।

संभु समय तेहि रामहि देखा। उपजा हियँ अति हरषु विशेषा॥
भरि लोचन छवि सिंधु निहारी। कुसमय जानि न कीन्हि चिन्हारी॥

राम ने लंका में न्याय और सद्वृत्ति की प्रतिष्ठा हेतु विभीषण को लंका का राजा मान लिया, फिर भी रावण के लिए, न्याय का मार्ग अपनाने पर, उसे हीं राजा बने रहने का समझौता का द्वार हमेशा खुला रखा। राम की सैन्य शक्ति अब रावण की तुलना में बहुत अधिक विशाल थी।

अस कहि राम तिलक तेहिसारा। सुमन वृष्टि नभ भई अपारा॥

राम के सैन्य शक्ति की प्रशंसा रावण के दूत ने भी की।

नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं। जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं॥

राम ने शिव की पूजा की और इस अन्तिम मुख्य छावनी पर सभी लोग ऋषि-मुनि इकट्ठे हुए। स्वभावतः शिव के पक्ष वाले सभी लोग इनके समर्थक हो गए। लंका जन समान्यतः शिव के भक्त थे।

सुनि कपीस बहु दूत पठाए। मुनिवर सकल बोलि लै आए॥
सिव द्रोही मम भगत कहावा। सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा॥

सभी विवेकी जन रावण को समझा रहे थे। मात्र स्वार्थी और अविवेकी लोगों केसमूह रावण को बरगलाने के लिए घेरे रहते थे और गलत मंत्रणा और जोश देते थे। योद्धागण रावण को व्यक्तिगत भक्ति और युद्ध अनुशासन के आधार पर रावण का साथ दे रहे थे।

नाथ वयरु कीजे ताही सों । बुधि बल सकिअ जीति जाही सों ।

सब के बचन श्रवण सुनि कह प्रहस्त कर जोरि ।

नीति विरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोर ॥

कहहि सचिव सब ठकुर सोहाती । नाथ न पूर आव एहि भाँति ॥

बारिधि नाघि एक कपि आवा । तासु चरित मन महुँ सब गावा ॥

अंगद राम का संवाद लेकर रावण के पास गया कि वह अनीति और मनमानी छोड़ दे जिससे जन साधारण, विद्वान और साधु पुरुषों का कष्ट मिट सके, तुम उनके कष्ट का कारण न बनो। राम तुम्हारा किसी प्रकार अहित नहीं चाहते। अगर वे चाहें तो तुम्हारा सत्वर नाश कर सकते हैं। अपनी और राम की शक्ति का तुलनात्मक अध्ययन कर के तुम देख लो कि वास्तव में शेर और शृंगाल जैसा अन्तर है।

बार बार अस कहइ कृपाला । नहिं गजारि जसु बधें सृकाला ॥

लेकिन अकारण और सबों की इच्छाओं के विरुद्ध रावण युद्धरत हुआ।

जो रन बिमुख सुना मैं काना । सो मैं हतब कराल कृपाना ॥

युद्ध को चरम स्थिति में भी अयोध्या के साथ सम्पर्क और संचार कायम था। हनुमान भी इस बीच अयोध्या गए।

गहि गिरि निसि नभ धावत भयऊ । अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ ॥

इस रण में शिव भी वर्त्तमान थे।

हमहू उमा रहे तेहि संगा । देखत राम चरित रनरंगा ॥

सभी तरह आपूर्ति की शृंखला पूर्ण रुप से कायम थी। सुरपति का सहयोग निरन्तर प्राप्त हो रहा था।

सुरपति निज रथ तुरत पठावा। हरष सहित मातलि लै आवा॥

युद्ध की गतिविधि और स्थिति की जानकारी सीता निरन्तर रख रही थी।

सत्य, अहिंसा, विवेक, सद्भाव-सम्मान और न्याय और नैतिकता, ज्ञान और विद्या पक्ष का विजय सदा से और पूर्ण से असंदिग्ध था। अन्त में वैसा ही विजय हुआ। तदनंतर रामचन्द्र प्रत्यक्ष रुप से और व्यक्तिगत रुप से जाकर शिव से मिले।

अब बिनती मम सुनहु सिव, जौं मो पर निज नेहु।
जाइ बिबाहहु सैलजहि, यह मोहि मागें देहु।



रामायण का शाश्वत मूल्य एवं वर्तमान

" मुनि तापस जिन्ह ते दुख ललहीं ।
तेनरेश विनु पावक दहहीं ॥ "

— राज्य धर्म, कर्त्तव्य और योग्यता की इससे अधिक सुन्दर और यथार्थ परिभाषा शायद नहीं हो सकती है ।

" जौं नर तात तदपि अति सूरा"—किसी भी प्रकार राम का अवतार ही दुष्टों का नाश करने और सज्जनों का कष्ट दूर करने और उन्हें संरक्षण देने हेतु हुआ था ।

"बयरु न कर काहुसन कोई । राम प्रताप विषमता खोई ॥"

—राज्य का सर्वथा यह आदर्श प्रबंध है ।

"करहिं मोहबस नर अघ नाना । स्वारथ रत पर लोक नसाना ।।
काल रूप तिन्हँ कहँ मैं भ्राता । सुभ अरु असुभ कर्म फलदाता ॥
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई । सुनहु करहु जो तुम्हहि सोहाई॥"

रामचन्द्र ऐसे राजा थे जो अपने को प्रभुत्व शून्य रखते थे और उचित कार्य करने का सबको आदेश और उत्तरदायित्व था । लेकिन जहाँ कोई स्वार्थवश या उत्तरदायित्वहीनता का कार्य किया उसके लिए वे कालरूप थे । राम और रामराज्य ऐसा घटित तथ्य और प्रयोग सिद्ध कार्य है जो चिर सत्य है और शाश्वत् आदर्श है । यही महात्मा गाँधी का आदर्श था और जिसे चरितार्थ होते नहीं देख वे अत्यन्त दुखी थे ।